विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा स्कूल के प्रति उनकी अभिरूचि के संबंध का अध्ययन

PAPER APPEARED IN BHARTIYA ADHUNIK SIKSHA, AN NCERT JOUNAL IN OCTOBER, 1991

डा. ए.के.पाण्डेय
प्राचार्य
एन.एम.डी.सी. प्रोजेक्ट विद्यालय
सझगवां, पन्ना (म.प्र.)

प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 8 ए 9 और 10 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनके स्कूल के प्रति अभिरूचि के संबंध को दर्शाता है। यह अध्ययन मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में स्थित एक औद्योगिक ग्राम, मझगवां के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों पर किया गया है। औद्योगिक पृष्ठभूमि के कारण इस स्कूल में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चे पढ़ते हैं। इस अध्ययन से इन तथ्यों की पुष्टि होती है कि सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग तथा माता–पिता की शिक्षा बच्चों में स्कूल के प्रति उनकी अभिरूचि को प्रभावित नहीं करते हैं।

अभिरूचि किसी विशेष दिशा में सोचने की भावना को दर्शाती है। बच्चों की स्कूल के प्रति अभिरूचि बहुत से कारणों पर निर्भर कररती है जिसमें से सामाजिक आर्थिक स्तर भी मुख्य है। बच्चों की स्कूल के प्रति अभिरूचि समय तथा कक्षा बदलने के कारण बदलती रहती है। चूंकि अभिरूचि हमारे बहुत से कार्यों का नियंत्राण करती है, अतः शिक्षको का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे शिक्षण के पहले विद्यालय तथा विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों के बारे में छात्राों की अभिरूचि जान लें, अन्यथा हो सकता है उनका शिक्षण प्रभावहीन हो पायें। विद्यालय के प्रति बच्चों का मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षण के प्रति अभिरूचि जानना हमारे शिक्षकों के लिये आवश्यक है। अभिरूचि अनुभव से उत्पन्न होती है। अतः बच्चे जिन परिस्थितियों में रहते हैं उसी प्रकार की अभिरूचि उनके अन्दर उत्पन्न होती है।

बच्चों के सामाजिक आर्थिक स्तर मुख्य तत्व हैं जो बच्चों के अन्दर स्कूल के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करते हैं। बच्चों के घर का रहन–सहन बच्चों पर प्रभाव डालता है और यह प्रभाव विद्यालय के प्रति उनकी अभिरूचि को उत्पन्न करता है। मनोवैज्ञानिक अभी भी एक मत नहीं है कि क्यों एक ही सामाजिक संरचना में पलने वाले बच्चों की अभिरूचि अलग–अलग प्रकार की होती हे। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों फ्रायड और जंग ने भी कोई स्पष्टीकरण इस प्रकार के अन्तर के लिये नहीं बताये, लेकिन उन्होंने यह जरूर बताया कि सामाजिक–आर्थिक स्तर बच्चों की अभिरूचियों में परिवर्तन के लिये जरूरी होता है। वर्तमान समय के टूटते परिवार बच्चों के अभिरूचि परिवर्तन के लिये मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। बहुत कम लोगों के साथ घर में रहने वाले बच्चे जब स्कूल जाते हैं तो वे स्कूल में भी इसी माननसिकता को दर्शाने का प्रयास कररते है। भार्गव एवं कपूर (1981) में सामाजिक स्तर का अन्य बातों पर प्रभाव का अध्ययन किया। क्रैच (1962) ने बताया कि अभिरूचि का बच्चों के अध्ययन के साथ गहरा संबंध है। काज (1977), अजैन (1972) ने सामजिक आर्थिक स्तर का अभिरूचि के साथ अध्ययन किया। इनके अध्ययन ने यह बात साबित कररने का प्रयास किया कि सामाजिक आर्थिक स्तर अभिरूचि को प्रभावित करता है तथा बच्चों पर इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक आर्थिक स्तर बच्चों में विद्यालय के प्रति कैसी अभिरूचि उत्पन्न करता है– प्रस्तुत अध्ययन इसका एक प्रयास है।

उपकल्पनायें

परिणामों का आवंटन संदर्भित साहित्य के मंथन के उपरांत चार उपकल्पनाओं का निर्धारण करके किया है विद्यार्थियों की स्कूल के प्रति अभिरूचि जो निम्नवत है :

1. विभिन्न कक्षाओं के बच्चों में स्कूल के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. लिंग परिवर्तन स्कूल के प्रति अभिरूचि परिवर्तन में सार्थक भाग नहीं लेता है।
3. विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने के सामाजिक आर्थिक स्तर का अभिरूचि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. शैक्षणिक प्रवीणता का अभिरूची के साथ सार्थक सम्बन्ध है।

न्यायदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिये मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में स्थित मझगवां हीरा खदान के द्वारा चलाये जा रहे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 8, 9 और 10 में पढ़ने वाले 150 छात्रा–छात्राओं का चुनाव किया गया। प्रत्येक कक्षा से 25 छात्रा तथा 25 छात्राओं का चुनाव स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्श विधि से किया गया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्कूल के प्रति अभिरूचि जानने के लिए पाण्डेय द्वारा निर्मित अभिरूचि खेल प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कथनों की कुल संख्या 40 है और ये सभी 40 कथन विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिरूचि को व्यक्त करते हैं। इस प्रश्नावली में कथनों के प्रति उत्तरदाता को अपनी सहमति खुलकर तथा निश्चित बिन्दु पर व्यक्त करने के लिये सहमति की मात्राा को अधिक से कम की ओर सजाया गया है।

सांख्यिकी विधि

(1) विभिन्न विचरण के बीच संबंधों के अध्ययन के लिये उत्पाद परिघात अध्ययन के लिये निकाली गई।

(2) सह सम्बन्ध के बीच के अंतर को निकाला गया।

(3) माध्य के महत्वपूर्ण ।अंतर को जांचने के लिये टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण तथ व्याख्या

प्रश्नावली के प्रशासन के उपरान्त छात्रों द्वारा व्यक्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर अंक देकर, प्रदूत अंकों का योग ज्ञात किया गया। प्रश्नावली के मान्चुल के अनुसार अंक दिये गये।

उपकल्पना 1

तालिका 1 में कक्षा के आधार पर विद्यालय के प्रति विद्यार्थियों की अभिरूचि दर्शाया गया है।

तालिका 1

1	8 वीं तथा 9वीं के बीच	.52	निरर्थक असार्थक
2.	8वीं तथा 10वीं बीच	.51	निरर्थक असार्थक
3.	9वीं तथा 10वीं के बीच	.49	निरर्थक असार्थक

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि विभिन्न कक्षाओं के छात्राों के बीच विद्यालय के प्रति अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः उपकल्पना 1 को स्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कक्षा परिवर्तन भी बच्चों के प्रति अभिरूचि को नही बदल पाता है।

उपकल्पना 2

तालिका 2 में लिंग और विद्यालय के प्रति अभिरूचि के सम्बन्ध में दर्शाया गया है।

लिंग	माध्य	प्रमाप–विचलन	सी.आर.	सार्थकता स्तर 0. 1
सार्थक	76.07	9.36	9.46	सार्थक
छात्राायें	72.03	7.32		

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः उपकल्पना 2 स्वीकृत की जाती है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि छात्रा–छात्राओं के सामाजिक आर्थिकस्तर अलग–अलग होने पर भी उनकी विद्यालय के प्रति अभिरूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।

उपकल्पना–3

तालिका 3 में सामाजिक आर्थिक स्तर तथा विद्यालय के प्रति विधार्थियों की अभिरूचि को दर्शाया गया है।

तालिका – 3

क्र.सं.	ग्रुप	माध्य	प्रमाप विचलन	सी.आर.	सार्थकता स्तर 0.5
1.	उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर समूह	91.43	10.32	0.52	निरर्थक
2.	उच्च अभिरूचि समूह	78.46	9.83		

तालिका 3 से यह विदित होता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर मापी पर ज्यादा अंक पाने वाले विद्यार्थियों तथा अभिरूचि मापी पर ज्यादा अंक पाने वाले विद्यार्थियों तथा अभिरूचि मापी पर ज्यादा

अंक पाने वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः उपकल्पना 3 स्वीकृत की जाती है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालय के प्रति विद्यार्थियों की अभिरूचि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

उपकल्पना–4

अभिरूचि उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच सहसंबन्ध को तालिका 4 में दर्शाया गया है।

तालिका – 4

क्र.सं.		अभिरूचि	एचीवमेंट	सामाजिक आर्थिक स्तर
1.	अभिरूचि	––	.64	.56
2.	एचीवमेंन्ट		––	.61
3.	सामाजिक आर्थिक स्तर			

.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि :

1. अभिरूचि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच धनात्मक तथा सार्थक संबंध है।
2. शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच धनात्मक तथा सार्थक सबंध है।
3. अभिरूचि तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच भी धनात्मक सार्थक संबंध है।

संदर्भ

1. भार्गव, एस. तथा कपूर, एम.डी. 'पर्सनल एण्ड सोशियो इकनामिक वैरियेबल्स इन रिलेश्न विथ एटीच्यूड्स टुवर्ड्स प्लांड फेमिली, 'इण्डियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकालोजी, 1981, 8 (1), 35–38.
2. क्रैच., एच, स्टुडैन्ट्स गाइड टु इफिसियेन्ट स्टडी, रीनहर्ट कम्पनी, न्यूयार्क, 1962
3. काज. ए.टी.एण्ड स्टोलेण्ड, एम.डी. कालेज एण्ड लाइफ, मैकग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1959
4. मेकगुर, हाउ टु स्टडी एण्ड टीच ? रीनहर्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, 1962
5. अजैन, जे.डी. यू कैन लर्न हाउ टु स्टडी, रीनर्हट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, 1972